

भारत-लैटिन अमेरिका व्यापार संबंध

प्रलमिस के लयि:

LAC कार्यक्रम, मरकोसुर देश के साथ भारत का मुक्त व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर ।

मेन्स के लयि:

मरकोसुर, लैटिन अमेरिकी देशों के साथ व्यापार समझौते, लैटिन अमेरिका के प्रति भारत की वदिश नीतिका विकास, लैटिन अमेरिका के कषेत्रीय एकीकरण से संबंधित चुनौतियाँ, जलवायु परिवर्तन, व्यापार नियम और आतंकवाद जैसे वैश्विक मुद्दों में लैटिन अमेरिका की भूमिका ।

[स्रोत: फाइनेंसियल एक्सप्रेस](#)

चर्चा में क्यों?

सभी 33 देशों में नरितर विकास और वविधि संबंधों के साथ, [लैटिन अमेरिका और कैरिबियन \(LAC\)](#) कषेत्र भारत की वदिश नीतिका मुख्य केंद्र बन गया है, भारत चीन से पीछे है, जो अपनी प्रगतिके बावजूद इस कषेत्र में बहुत अधिक मज़बूत उपस्थिति है ।

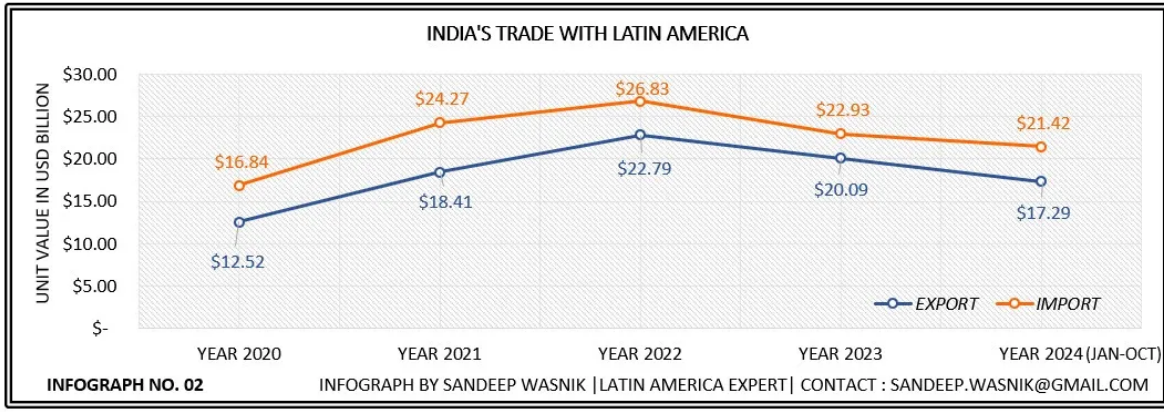
लैटिन अमेरिका के साथ भारत के संबंध कैसे हैं?

■ ऐतहासिकि पृष्ठभूमि:

- भारत-लैटिन अमेरिका संबंधों का एक समृद्ध इतहास है, जसिमें [पांडुरंग खानखोजे](#) (एक कृषि वैज्ञानिकि जिन्होंने मैक्सिको में कृषि पद्धतियों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभाई) और [एम.एन रॉय](#) (एक राजनीतिकि कार्यकर्त्ता, जिन्होंने भारतीय और मैक्सिकन कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की) जैसी हस्तियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है ।
 - ऑक्टोवियो पाज़, रवींद्रनाथ टैगोर और वकिटोरिया ओकैम्पो जैसे कविराजनयिकों और लेखकों के माध्यम से भारत और लैटिन अमेरिका के बीच एक समृद्ध साहित्यिक आदान-प्रदान हुआ जसिने दोनों देशों के दृष्टिकोण को आकार प्रदान कया ।
 - भारत के कविराजनयिकि [अभय.के](#) ने लैटिन अमेरिकी कषेत्र पर कविति की पुस्तकें लिखी जसिमे [द अल्फाबेट्स ऑफ लैटिन अमेरिका](#) और [द प्रोफेसी ऑफ ब्रासीलिया](#) शामिल हैं ।
 - [प्रारंभिक सहभागिता](#): उच्च स्तरीय सहभागिता वर्ष 1961 में प्रधानमंत्री नेहरू की मैक्सिको यात्रा के साथ शुरू हुई, जसिके बाद वर्ष 1968 में [इंदिरा गांधी](#) ने आठ लैटिन अमेरिकी और कैरिबियाई (LAC) देशों का दौरा कया ।
- हालिया घटनाक्रम: वर्ष 2014 में ब्राज़ील में आयोजित [ब्रक्सि शखिर सम्मेलन](#) में प्रधानमंत्री मोदी की भागीदारी से संबंधों में तेज़ी आई ।
- आर्थिक उदारीकरण: वर्ष 1990 के बाद के आर्थिक उदारीकरण से व्यापार, नविश और नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग में मज़बूती आई ।
 - भारत ने सात LAC देशों के साथ व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर कये तथा नरियात और आर्थिक सहयोग को बढ़ाने हेतु वर्ष 1997 में फोकस LAC कार्यक्रम शुरू कया गया ।

■ वर्तमान व्यापार परदृश्य:

- व्यापार आँकड़ें: वर्ष 2023 में, लैटिन अमेरिका से भारत का आयात 22.93 बलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया, जबकि नरियात 20.09 बलियन अमेरिकी डॉलर रहा, कुल व्यापार मात्रा 43.22 बलियन अमेरिकी डॉलर रही तथा वर्ष 2028 तक 100 बलियन अमेरिकी डॉलर का लक्ष्य रखा गया ।
- प्रमुख व्यापार साझेदार: ब्राज़ील, मैक्सिको और कोलंबिया देश इस कषेत्र में भारत के प्राथमिक व्यापार साझेदार हैं ।
- आयात संरचना: प्रमुख आयातों में [पेट्रोलियम तेल](#), सोना (प्लैटिनम चढ़ाया हुआ सोना सहित) और [सोयाबीन तेल](#) शामिल हैं ।
- नरियात संरचना: प्रमुख नरियातों में [पेट्रोलियम तेल](#) (कच्चे तेल को छोड़कर), [मोटर कारें](#) तथा परिवहन के लयि डिज़ाइन कये गए अन्य मोटर वाहन शामिल हैं ।
- आर्थिक स्थिति: लैटिन अमेरिका को भारत के लयि "गोल्डिलॉक्स कषेत्र" में माना जाता है- जो अमेरिका और यूरोप जैसे अत्यधिक वनियमति बाज़ारों और अफ्रीका के कम प्रतस्पर्द्धा बाज़ारों के बीच संतुलन प्रदान करता है ।



■ राजनीतिक और द्विपक्षीय सहयोग:

- **वदिश नीति प्राथमिकता:** ऐतिहासिक रूप से, लैटिन अमेरिका अपने सीमित भू-राजनीतिक प्रभाव के कारण भारत की वदिश नीति में कम प्राथमिकता वाले देश की सूची में रहा है। हालाँकि, हाल के घटनाक्रम इस दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत देते हैं।
 - विशेष रूप से, **वदिश मंत्री एस. जयशंकर ने अप्रैल, 2023 में गुयाना, पनामा, कोलंबिया और डोमिनिकन गणराज्य की ऐतिहासिक यात्रा की, यह पहली बार है जब किसी भारतीय वदिश मंत्री ने इन देशों का दौरा किया है।**
- **सहभागिता में वृद्धि:** वर्ष 2022 में **G20 सदस्य अर्जेंटीना, ब्राज़ील और मैक्सिको को** कनिष्ठ मंत्री के बजाय **भारत के वदिश मंत्री के अधिकार क्षेत्र** में रखा गया।
- **ब्राज़ील की नेतृत्वकारी भूमिका:** ब्राज़ील को **ब्रिक्स, IBSA (भारत, ब्राज़ील और दक्षिण अफ्रीका)** और **G-20** जैसे बहुपक्षीय मंचों में सक्रिय भागीदारी के कारण भारत के साथ सबसे अधिक राजनीतिक संबंध रखने वाला देश माना जाता है।
- **अधिमिन्य व्यापार समझौते (PTA):** भारत और चिली के साथ-साथ भारत और मरकोसुर के बीच PTA पर हस्ताक्षर, भारत के साथ आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिये लैटिन अमेरिका की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
 - वर्ष 1991 में **स्थापित लैटिन अमेरिकी व्यापार समूह मरकोसुर में** छह सदस्य हैं, अर्थात् **ब्राज़ील, अर्जेंटीना, उरुग्वे, पैराग्वे, वेनेजुएला और बोलीविया।**
 - प्रारंभ में इसका उद्देश्य **वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी और लोगों के मुक्त आवागमन को सुवधाजनक बनाना था, लेकिन वर्ष 1995 में यह एक सीमा शुल्क संघ बन गया और अब यह एक साझा बाज़ार की ओर अग्रसर है।**
- **सामरिक स्वायत्तता:** दोनों क्षेत्रों ने एक प्रकार की गुटनरिपेक्षता को अपनाया है, जसिं **भारत द्वारा 'रणनीतिक स्वायत्तता' तथा लैटिन अमेरिकी देशों द्वारा 'सक्रिय गुटनरिपेक्षता' (ANA) कहा जाता है, जो विशेष रूप से यूक्रेन में युद्ध** जैसे वैश्विक मुद्दों के संबंध में उनकी साझा स्थिति से स्पष्ट है।
- **सांस्कृतिक संबंध:**
 - **साहित्यिक प्रभाव:** वर्ष 1924 में टैगोर की अर्जेंटीना यात्रा और उनके साहित्यिक योगदान ने **मैक्सिकन दार्शनिक जोस वासकोनसेलोस** द्वारा अनुवाद के माध्यम से लैटिन अमेरिकी साहित्य पर एक अमिट छाप छोड़ी है।
 - **गांधी की वरिषत:** **महात्मा गांधी द्वारा दी गई** अहसास संबंधी शिक्षा लैटिन अमेरिका में प्रबल रूप से प्रचलित है, जसिका पालन ब्राज़ील में पलास एथेनास जैसे संगठनों द्वारा किया जाता है।

■ LAC क्षेत्र के साथ व्यापार समझौते/समझौता ज्ञापन:

■ [भारत - चिली PTA](#)

■ [भारत - मरकोसुर PTA](#)

■ [भारत और अर्जेंटीना के बीच व्यापार समझौता](#)

■ [इक्वाडोर के साथ आर्थिक सहयोग पर समझौता ज्ञापन](#)

■ [भारत और क्यूबा के बीच व्यापार समझौता](#)



भारत के लिये लैटिन अमेरिका का क्या महत्त्व है?

- **आर्थिक अवसर:** लैटिन अमेरिका प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है, जिसमें ताँबा, लथियम और लौह अयस्क जैसे खनजि शामिल हैं, जो भारत की बढ़ती औद्योगिक मांगों के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
 - इस क्षेत्र का सामूहिक **सकल घरेलू उत्पाद 6 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है**, जो भारतीय नरियात और नविश के लिये पर्याप्त बाज़ार उपलब्ध कराता है।
- **ऊर्जा सुरक्षा:** ऊर्जा की बढ़ती मांग के साथ, लैटिन अमेरिका भारत के लिये कच्चे तेल का प्रमुख आपूर्तिकर्ता बनकर उभरा है।
 - हाल के वर्षों में वेनेजुएला, मैक्सिको और ब्राज़ील से कच्चे तेल का आयात LAC से भारत के कुल आयात का 30% रहा है।
 - **सामरिक साझेदारियाँ:** भू-राजनीतिक परिदृश्य परिवर्तित हो गया है, जिससे भारत को इस क्षेत्र में **चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के लिये लैटिन अमेरिका के साथ अपने संबंधों को बढ़ाने की प्रेरणा मिली है।**
- **सांस्कृतिक एवं शैक्षिक आदान-प्रदान:** भारत और लैटिन अमेरिका के बीच सांस्कृतिक संबंधों को शैक्षिक आदान-प्रदान तथा सूचना प्रौद्योगिकी एवं फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्रों में सहयोग के माध्यम से दृढ़ता मिली है।
 - **भारतीय IT कंपनियाँ** इस क्षेत्र में 40,000 से अधिक स्थानीय पेशेवरों को रोज़गार देती हैं, जो रोज़गार सृजन और कौशल विकास में योगदान देती हैं।
- **खाद्य सुरक्षा:** लैटिन अमेरिका का विशाल कृषिपरिदृश्य भारत को **खाद्य आपूर्ति सुनिश्चित करने के अवसर प्रदान करता है, विशेष रूप से दालों और तिलहनों में**, जो खाद्य सुरक्षा के लिये आवश्यक हैं।

वे कौन-से क्षेत्र हैं, जिनमें भारत लैटिन अमेरिकी देशों के साथ सहयोग कर रहा है?

- **फार्मास्यूटिकल्स और हेल्थकेयर:** भारत को विश्व स्तर पर अपने फार्मास्यूटिकल उद्योग के लिये जाना जाता है, जो कफियाती मूल्यों पर उच्च गुणवत्ता वाली दवाइयों उपलब्ध कराता है।
 - इन नरियातों के लिये शीर्ष पाँच गंतव्य अमेरिका, बेल्जियम, दक्षिण अफ्रीका, यूके और ब्राजील हैं।
- **ऊर्जा सहयोग:** भारत बोलीविया में लथियम भंडार की खोज और नषिकरण कर रहा है। वर्ष 2023 में भारत की अल्टमिनि प्राइवेट लिमिटेड ने बोलीविया की सरकारी स्वामित्व वाली लथियम कंपनी के साथ रणनीतिक साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर किये।
 - बोलीविया अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन में भी शामिल हो गया।
- **कृषि और खाद्य सुरक्षा:** LA क्षेत्र में विशाल कृषि संसाधन हैं जो भारत को अपनी खाद्य सुरक्षा चिंताओं को दूर करने में मदद करते हैं।
 - दोनों क्षेत्रों में उत्पादकता और स्थिरता बढ़ाने के लिये खाद्य प्रसंस्करण और कृषि अनुसंधान में सहयोग की संभावनाएँ तलाशी जा रही हैं।
- **बुनियादी ढाँचे का विकास:** रेलवे, राजमार्ग और ऊर्जा मार्गों सहित एलए राष्ट्रों में आधुनिक बुनियादी ढाँचे के विकास में सहयोग।
 - भारत दक्षिण-दक्षिण सहयोग के तहत बोलीविया के साथ अपनी विकास साझेदारी को महत्त्व देता है और बोलीविया की पसंद के क्षेत्रों में विकास परियोजनाओं का समर्थन करने के लिये 100 मिलियन अमेरिकी डॉलर की ऋण सुविधा प्रदान की है।

व्यापार समझौतों के प्रकार

- **मुक्त व्यापार समझौता (FTA):** FTA दो या दो से अधिक देशों के बीच एक व्यापक समझौता है जिसका उद्देश्य वभिन्न प्रकार की वस्तुओं एवं सेवाओं पर टैरिफ और कोटा जैसी व्यापार बाधाओं को कम करना है।
 - भारत ने श्रीलंका और आसियान जैसे वभिन्न व्यापारिक समूहों सहित कई देशों के साथ FTA पर बातचीत की है।
- **अधिमिन्य व्यापार समझौता (PTA):** PTA एक ऐसा समझौता है जिसमें साझेदार देश विशिष्ट वस्तुओं पर टैरिफ कम करके कुछ उत्पादों तक अधिमिन्य पहुँच प्रदान करते हैं। कुछ टैरिफ को तो पूरी तरह से समाप्त भी किया जा सकता है।
 - FTA के विपरीत, PTA आम तौर पर कम व्यापक होते हैं और केवल सीमित संख्या में वस्तुओं को ही कवर कर सकते हैं। कुछ उत्पादों के लिये टैरिफ को शून्य तक भी कम किया जा सकता है।
 - भारत ने अफगानिस्तान के साथ एक PTA पर हस्ताक्षर किये हैं।
- **व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (CEPA):** CEPA, FTA से अधिक व्यापक है, जिसमें सेवाओं में व्यापार, निवेश और व्यापक आर्थिक सहयोग शामिल है। भारत ने दक्षिण कोरिया और जापान के साथ CEPA स्थापित किया है।
- **व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (CECA):** CECA मुख्य रूप से व्यापार शुल्क और टैरिफ दर कोटा (TRQ) पर केंद्रित है, लेकिन CEPA की तुलना में कम व्यापक है। भारत ने मलेशिया के साथ CECA पर हस्ताक्षर किये हैं।

भारत के प्रमुख व्यापार समझौते

पड़ोसी देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौता (FTA)

- ④ भारत-श्रीलंका FTA
- ④ भारत-नेपाल व्यापार संधि
- ④ व्यापार, वाणिज्य और पारगमन पर भारत-भूटान समझौता

भारत के क्षेत्रीय मुक्त व्यापार समझौते (FTA)

- ④ भारत आसियान वस्तु व्यापार समझौता (11): 10 आसियान देश + भारत
- ④ दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार समझौता (7): भारत, पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश, भूटान और मालदीव
- ④ व्यापार प्राथमिकताओं की वैश्विक प्रणाली (41 देश + भारत)

भारत का CECA और CEPA

CECA/CEPA मुक्त व्यापार समझौते से अधिक व्यापक है, जो नियामक, व्यापार एवं आर्थिक पहलुओं को व्यापक रूप से संबोधित करता है, CEPA में सेवाओं, निवेश आदि समेत व्यापक क्षेत्र है, जबकि CECA मुख्य रूप से टैरिफ और TQR दरों के समझौते पर केंद्रित है।

- ④ संयुक्त अरब अमीरात, दक्षिण कोरिया, जापान के साथ CEPA
- ④ सिंगापुर, मलेशिया के साथ CECA

मुक्त व्यापार समझौता देशों के बीच एक व्यापक समझौता है, जो विशिष्ट उत्पादों और सेवाओं को छोड़कर एक नकारात्मक सूची (negative list) के साथ अधिमान्य व्यापार शर्तों और टैरिफ रियायतों की पेशकश करता है।

अन्य:

- भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता (ECTA)
- भारत-थाईलैंड अर्ली हार्वेस्ट स्कीम (EHS)
- भारत-मॉरिशस व्यापक आर्थिक सहयोग और साझेदारी समझौता (CECPA)

एक अर्ली हार्वेस्ट स्कीम (EHS) FTA/CECA/CEPA से पहले होता है, जहाँ समझौता करने वाले देश टैरिफ उदारीकरण के लिये उत्पादों का चयन करते हैं, व्यापक व्यापार समझौतों का मार्ग प्रशस्त करते हैं और आत्मविश्वास को बढ़ावा देते हैं।

अधिमान्य व्यापार समझौते (PTA)

PTA में भागीदार सहमत टैरिफ सीमाओं पर शुल्क कम करके, कम या शून्य टैरिफ के लिये पात्र उत्पादों की एक सकारात्मक सूची बनाए रखते हुए विशिष्ट उत्पादों तक अधिमान्य पहुँच प्रदान करते हैं।

- ④ एशिया प्रशांत व्यापार समझौता (APTA): बांग्लादेश, चीन, भारत, दक्षिण कोरिया, लाओ PDR, श्रीलंका और मंगोलिया
- ④ SAARC अधिमान्य व्यापार समझौता (SAPTA): SAFTA के समान
- ④ भारत-MERCOSUR PTA: ब्राजील, अर्जेंटीना, उरुग्वे, पैराग्वे और भारत
- ④ चिली, अफगानिस्तान के साथ भारत का PTA



लैटिन अमेरिकी देशों के साथ संबंधों को गहरा करने में क्या चुनौतियाँ हैं?

- क्षेत्रीय तंत्रों का अभाव: भारत ने अभी तक लैटिन अमेरिका को एक क्षेत्र के रूप में या मध्य अमेरिकी एकीकरण प्रणाली (SICA), लैटिन अमेरिकी और कैरेबियाई राज्यों के समुदाय (CELAC), मरकोसुर और प्रशांत गठबंधन जैसे उप-समूहों के साथ संलग्न करने के लिये एक रूपरेखा विकसित नहीं की है।
 - लैटिन अमेरिका के भीतर क्षेत्रीय एकीकरण अभी भी अधूरा है, जिससे अलपावध में द्विपक्षीय संबंध अधिक व्यवहार्य हो गए हैं।
- सीमिति व्यापार समझौते: मरकोसुर और चिली के साथ मौजूदा अधिमान्य व्यापार समझौते (PTA) का दायरा दक्षिण कोरिया, जापान या आसियान के साथ भारत के FTA की तुलना में संकीर्ण है।
 - बढ़ते निर्यात के बावजूद, लैटिन अमेरिका को मुद्रास्फीति, राजनीतिक अस्थिरता और बुनियादी ढाँचे में कम निवेश जैसी आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे व्यापार प्रभावित हो रहा है।
- चीन का प्रभुत्व: भारत को चीन की महत्त्वपूर्ण व्यापारिक उपस्थिति, रणनीतिक निवेश और प्रमुख लैटिन अमेरिकी देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों (FTA) से प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ रहा है।
- भौगोलिक बाधाएँ: व्यापार क्षेत्र और सांस्कृतिक संबंधों में सकारात्मक विकास के बावजूद, भौगोलिक दूरी और भाषा संबंधी बाधाएँ सामाजिक संपर्कों के लिये चुनौतियाँ उत्पन्न करती हैं, जिनमें उच्च यात्रा लागत और लैटिन अमेरिका की यात्रा करने वाले भारतीयों के लिये वीजा संबंधी कठिनाइयाँ शामिल हैं।
 - बहुत से भारतीय अभी भी लैटिन अमेरिकी देशों को पुरानी रूढ़ियों के माध्यम से देखते हैं, जैसे कि "बनाना रिपब्लिक" जो अस्थिरता और नशीली दवाओं की तस्करी की विशेषता रखते हैं। इसके विपरीत, लैटिन अमेरिकी प्रायः भारत को केवल अध्यात्म और गुरुओं की भूमि के रूप में देखते हैं।
- द्विपक्षीय तालमेल: यह संबंध जलवायु परिवर्तन, व्यापार और सुरक्षा जैसे मुद्दों पर द्विपक्षीय सहयोग से प्रेरित है, हालाँकि रक्षा और अंतरिक्ष जैसे रणनीतिक क्षेत्रों में सीमिति भागीदारी देखी गई है।

लैटिन अमेरिका के साथ अपने संबंध बेहतर करने के लिये भारत क्या रणनीति अपना सकता है?

- "फोकस: LAC कार्यक्रम को पुनः सक्रिय करना: इस व्यापार संवर्द्धन कार्यक्रम से बाज़ार पहुँच को मज़बूती मिलने के साथ संस्थागत तंत्र में सुधार एवं आर्थिक बुनियादी ढाँचे का विकास हो सकता है जिससे व्यापार के लिये अनुकूल वातावरण तैयार हो सकेगा।

- उन क्षेत्रों में चयनात्मक व्यापार को बढ़ावा देना चाहिये जहाँ भारत को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त हों जैसे
- **द्विपक्षीय समझौते एवं नविश प्रोत्साहन:** भारत को **लैटिन अमेरिकी देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते (FTA)** एवं तरजीह व्यापार व्यवस्था को आगे बढ़ाना चाहिये जिसमें **प्रौद्योगिकी, कृषि तथा स्वच्छ ऊर्जा** जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिये।
 - भारत एवं लैटिन अमेरिकी देशों के बीच **परसन टू परसन (P2P)** एवं **बज़िनेस टू बज़िनेस (B2B)** संबंधों को बढ़ावा देने से सांस्कृतिक आदान-प्रदान में सुविधा होगी और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।
- **राजनयिक समन्वय:** उच्च स्तरीय यात्राओं, **क्षेत्रीय व्यापार शिखर सम्मेलनों में भागीदारी** तथा **सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के माध्यम से राजनयिक संबंधों को मज़बूत** करने के साथ गहन आर्थिक सहयोग का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।
- **उन्नत नरियात संवर्द्धन:** भारतीय नरियातकों को **लैटिन अमेरिकी बाज़ार** में प्रवेश करने के लिये वित्तीय सहायता तथा लक्षित प्रयासों की आवश्यकता है।
 - **नरियात संवर्द्धन परिषद** एवं **उद्योग संघ** इस संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- **लैटिन अमेरिकी हितों पर बल देना:** भारत को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर **वेनेजुएला, अर्जेंटीना एवं हैती** जैसे लैटिन अमेरिकी देशों के लिये सक्रिय रूप से समर्थन देना चाहिये।
 - ऐसा करके भारत अपने राजनयिक संबंधों को मज़बूत कर सकता है तथा इन देशों के साथ एकजुटता (वशिष रूप से **आर्थिक अस्थिरता और राजनीतिक चुनौतियों जैसे मुद्दों पर ध्यान देने में**) प्रदर्शित कर सकता है।
- **सेवा व्यापार संवर्द्धन:** FTA साझेदारों के साथ संबंधित सेवा क्षेत्रों में गैर-टैरिफि बाधाओं का एक व्यापक डेटाबेस तैयार करना चाहिये।
 - प्राथमिकता के आधार पर व्यावसायिक योग्यताओं के क्रम में **पारस्परिक मान्य समझौते** स्थापित करने चाहिये।
 - **सेवा प्रदाताओं के लिये** बाजार पहुँच संबंधी मुद्दों की रपौट करने हेतु एक डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित करना चाहिये।
 - उदाहरण के लिये, **यूरोपीय संघ की व्यापार बाधा रपौटिंग प्रणाली के समान** एक प्रणाली लागू करनी चाहिये।
 - बाजार-वशिषिट रणनीतियों के साथ समरूपि सेवा नरियात संवर्द्धन परिषदों की स्थापना करनी चाहिये।

दृष्टिभेन्स प्रश्न

प्रश्न: लैटिन अमेरिका के साथ भारत के व्यापार संबंधों से जुड़ी चुनौतियों एवं अवसरों पर चर्चा कीजिये।

यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

??????????:

प्रश्न. नमिनलखिति में से कसि एक समूह में चारों देश G-20 के सदस्य हैं? (2020)

- अर्जेंटीना, मेक्सिको, दक्षिण अफ्रीका और तुर्की
- ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, मलेशिया और न्यूजीलैंड
- ब्राज़ील, ईरान, सऊदी अरब और वयितनाम
- इंडोनेशिया, जापान, सगिपुर और दक्षिण कोरिया

उत्तर: (a)

प्रश्न: नरिपेक्ष और प्रतिव्यक्तवास्तविक GNP की वृद्धि आर्थिक विकास की ऊँची दर का संकेत नहीं करती, यदि (2018)

- औद्योगिक उत्पादन कृषि उत्पादन के साथ-साथ बढ़ने में वफिल रह जाता है।
- कृषि उत्पादन औद्योगिक उत्पादन के साथ-साथ बढ़ने में वफिल रह जाता है।
- नरिधनता और बेरोज़गारी में वृद्धि होती है।
- नरियात की अपेक्षा आयात तेज़ी से बढ़ते हैं।

उत्तर: C